शरणागति से पूर्व, अपनी बुद्धि की पहुँच तक इस विषय पर विचार-विमर्श करने का जीव को अधिकार है। देखा जाए तो श्रीभगवान् के उपदेश को ग्रहण करने की सर्वोत्तम विधि यही है। इसी प्रकार की आज्ञा श्रीकृष्ण के बाह्य प्रकाश—गुरुदेव के माध्यम से प्राप्त होती है।

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।।६४।।

सर्वगुह्यतमम्=परम गोपनीय; **भूयः**=फिर; **शृणु**=सुन; **मे**=मेरे; **परमम्**=परम (सब शास्त्रों, गीता के भी सारभूत); **वचः**=वचन को; **इष्टः**=प्रियतम; **असि**=(तू) है; **मे**=मेरा; **दृढम्**=अतिशय; **इति**=यह; **ततः**=इसलिए; **वक्ष्यामि**=कहता हूँ; **ते**=तेरे; **हितम्**=हित के लिए।

अनुवाद

सब गोपनियों में भी गोपनीय मेरे परम सार वचन को फिर भी सुन। तू मेरा अतिशय प्रिय है, इसलिए तेरे हित के लिए कहता हूँ।।६४।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को प्राणीमात्र के अन्तर्यामी परमात्मा का गोपनीय ज्ञान सुनाया है और अब इस ज्ञान का परम गोपनीय सार-सर्वस्व सुनाते हैं।वे जीव का आह्वान करते हैं कि वह उन्हीं श्रीभगवान् के शरणागत हो जाय। नौवें अध्याय के अन्त में उन्होंने कहा है, ''निरन्तर मेरा ही चिन्तन-स्मरण कर।'' गीतोपदेश के सार को प्रकट करने के लिए उसी शिक्षा की यहाँ पुनरावृत्ति की है। इस सारामृत को वास्तव में केवल श्रीकृष्ण का अतिशय प्रेमास्पद शुद्धभक्त समझ सकता है; साधारण मनुष्य के लिए यह बुद्धिगम्य नहीं है। यह सम्पूर्ण वैदिक शास्त्रों में सबसे महत्त्वपूर्ण उपदेश है। इस सन्दर्भ में श्रीकृष्ण जो कुछ कह रहे हैं, वह ज्ञान का परम सारभूत सर्वस्व है। यह केवल अर्जुन के लिए नहीं कहा गया है; जीवमात्र को इसका अनुसरण करना चाहिए।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।।६५।।

मन्मनाः भव=मुझ में मन वाला हो; **मद्भक्तः**=मेरा भक्त हो; **मद्याजी**=अतिशय प्रेमसहित मेरी अर्चना कर; **माम्**=मुझे; **नमस्कुरु**=प्रणाम कर; **माम्**=मुझे; **एव**=ही; **एष्यसि**=प्राप्ति होगा; **सत्यम्**=सत्यपूर्वक; **ते**=तुझ से; **प्रतिजाने**=प्रतिज्ञा करता हूँ; **प्रियः**=(तू) प्रिय; **असि**=है; **मे**=मेरा।

अनुवाद

नित्य-निरन्तर मुझ में मन वाला हो और मेरा भक्त हो; मेरा पूजन कर और मुझे ही प्रणाम कर। इस प्रकार तू मुझ को ही प्राप्त होगा, यह मैं तुझ से सत्य प्रतिज्ञा करता हूँ, क्योंकि तू मेरा अतिशय प्रिय सखा है।।६५।।